अकेलापन का एहसास ू उषा प्रियंवदा की चुनिंदा कहानियों में

डॉ सजीव केए असिस्टेंट प्रोफेसरए
एन एस एस कॉलेजए ओटप्पलम ण

संयुक्त परिवार टूट गया। अणु परिवार अमल में आया। आधुनिक युग इंसान के दिल में कई तरह के तनाव भराने लगा। इंसान भीड़ में रहकर भी अकेलेपन का एहसास भोगने लगा। अकेलेपन कई तरह से संभव हो जाता है। अकेलापन और आर्थिक समस्याओं से आहत नारी और व्यक्ति के धुंधले स्वरूप को उषा प्रियम्वदा ने बड़ी सजगता और पैनी दृष्टि से अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। उनकी कुछ चुनिंदा कहानियों में अकेलेपन का मार्मिक बायां किस तरह हुआ हैए इसकी खोज ही इस शोध का मुख्य उद्देशय है।

;कुंजी शब्द ू अकेलेपनए सम्बन्धए स्वीकृतिए नींद ए ज़िन्दगी और गुलाब आदि द्ध

स्वातंत्र्योत्तर कहानी कला के विकास में भी उषा प्रियंवदा का योगदान महत्वपूर्ण है। पाँचवें दशक में हिंदी के जिन कथाकारों में पाठकों और समीक्षकों का ध्यान सबसे ज्यादा आकर्षित किया उनमें ष्उषा प्रियंवदाष का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है । उषा प्रियंवदा की कहानियों में यद्यपि आधुनिक शिल्प. विधान प्राप्त होता हैए पर वे कला को उतना महत्व नहीं देतीए जितना जीवन के यथार्थ को। उन्होंने हिंदी साहित्य के लिए अनेक कहानियाँ और कुछ उपन्यास भी लिखकर अनमोल देन दी है। उनकी कहानियां आज के पारिवारिक जीवन के उन्मूलन को उभारती हैए जो धीरे ृ धीरे गल रहे हैं और किसी न किसी प्रकार नई मान्यताएं एवं मूल्य जिनका स्थान ले रहे हैं। प्रियंवदा जी की अधिकांश कहानियां अमेरिकी अथवा युरोपीय परिवेश में लिखी गई है। और जिन कहानियों का परिवेश भारतीय है उनमें भी प्रमुख पात्रए जो प्रायरूनारी हैएका संबंध किसी न किसी रूप में यूरोप अथवा अमेरिका से रहता है। इस एक तथ्य के कारण ही उनकी कहानियों कए बहुचर्चित मुहावरे की भाषा मेंए भोगे हुए यथार्थ

की संज्ञा भी दी जा सकती है। और इसी तथ्य के कारण उनकी कहानियों में आधुनिकता का स्वर भी अधिक प्रबल है।

श्री धनंजय वर्मा का कहना है ृश्उनकी दुनिया उपेक्षा के दुःख से तपी एकरसए जीवन के ऊन सहती और असफल तथा सुने जीवन की पीड़ा भोगती नारियों की है। संस्कारों और रूढ़ नैतिकता से विद्रोह यदि वहां है भी तो अपने पुरातन अतीत और सहज्जता दुर्बल से चेतना के धरातल पर मुक्त नहीं हो पाई हैश्।;१द्ध उषा प्रियंवदा की कहानियों में जगह.जगह मानवीयता और करुणा के स्वर भी फूट पड़ते हैं उनकी कहानियों में संवेदना की ताजगी है और उनकी भाषा वस्तुपरक है। डॉक्टर लालू चंद गुप्त कहते हैं कि. श्आज की नारी में स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत जो परिवर्तन आए हैए आधुनिक मध्यवर्गीय परिवारों की क्या स्थिति हैए और आधुनिक परिवर्तन संदर्भ में प्रचलित पति.पत्नी के संबंधों का स्वरूप क्या है ृ यही उषा प्रियंवदा की कहानियों का कथ्य है। इस दृष्टिकोण को प्रदान करते समय उसका प्रायरू एक एक पात्र वर्तमान जीवन की विसंगतियोंए कुंठाओंए वेदनाए पीड़ा और शून्यता से ग्रस्त हो गया हैं श्। ;२द्ध

उषा प्रियंवदा की सभी कथाओं में यथार्थ युगबोध निहित है। बदलते आधुनिक युग समाज में पारिवारिक रिश्तों में बदलावए बेकारीए उदासीए नारी असस्मिता जैसी कई महत्वपूर्ण विषय के साथ एक मुख्य रुप से अकेलापन को भी अभिव्यक्त हुई है। उनकी सर्वाधिक चर्चित कुछ कहानियाँ हैं ष्ज़िन्दगी और गुलाब के फूल ष्ए ष्नींदष्ए ष्सम्बन्ध ष्ए ष्स्वीकृति ष्ए आदिए इन कहानियों के माध्यम से प्रियंवदा जी अकेलापन की समस्या को दिखाने का प्रयास किया है। प्रियंवदा जी की कहानियाँ विभिन्न प्रकार के मुद्दों को लेकर होते है लेकिन सभी कहानियों में कुछेक तत्व समान रुप से दिखायी पड़ते है। वे हैं अकेलापनए उदासीए निराशाए इत्यादि जो कि आज के आधुनिक भौतिकवादि जगत की देन है। लोग आज अपने जीवन में भौतिक सुखों की तलाश में भी भटकते रहते है जिसके कारण वे अपने आस .पास की ज़िन्दगी में जो कुछ भी है या जो कोई भी है उनसे दूर हो जाते है या कट जाते है। जिससे साथ वाला अकेला हो जाता है। इसलिए उनकी कहानी इस दौर में ज़्यादा महत्वपूर्ण जो जाती है। प्रियंवदा ने पात्रों

के मानसिक उतार . चढ़ावए उनके व्यवहारए उनकी बात .चीत आदि से ही सारी स्थिति स्पष्ट हो जाती है। उनकी कहानियों की विशेषता की चर्चा करते विजयमोहन सिंह का कहना है कि दृष्उनकी कहानी एक विशेष प्रकार का मानसिक तथा परिवेशगत वातावरण रचतीए जिसमें उदासीए अकेलापन और बाहर या दूसरे से न जुड़ पाने की एक अभिशप्त स्थिति अंकित की जाती है श। ;३द्ध

उषा प्रियंवदा की कहानियों में जो निहित युगबोध है उसमें सबसे अधिक स्वर जो उभरकर आता है वह है अकेलापन और उदासी। आज इस भाग .दौड़ की ज़िन्दगी में व्यक्ति चाहे कितना भी अपने मित्रए परिचितए प्रेमी या परिवार के साथ रह ले लेकिन कही.न.कही से कभी.न.कभी वह अपने आप को अकेला महसूस करता है उदास रहने लगता है। और अकेलापन की और अग्रसर होता है। क्यों कि उसके मन में वर्तमान परिस्थिति में जो कुछ भी घटित होता है उसे वह स्वीकार नहीं कर पाता। उसके प्रतिकूल यदि कोई बात हो जाए तो वह जैसे उससे भागता फिरता है। साथ ही व्यक्तिगत जीवन में हर प्रकार की सुख सुविधा की चाह की भाग दौड़ में जीवन में हर प्रकार की सुख सुविधा की चाह की भाग दौड़ में वह या तो सबको पीछे छोड़ आता है और फिर अकेला बना देता है। उषा प्रियंवदा की कुछ ऐसी कहानी है जिसमें आज के युग की सबसे बड़ी चुनौती अकेलापन की समस्या जो या तो परिस्थितियों ने खड़ी की है या व्यक्ति ने स्वयं चाहा है। इस समस्या कोउनकी कुछ प्रमुख कहानियों में देखा जा सकता है जो हेए ज़िन्दगी और गुलाब के फूलए नींदए सम्बन्धए स्वीकृति। इन सभी कहानियों के स्त्री या पुरुष पात्र किसी.न.किसी कारण से अकेले नज़र आते हैं। इन सभी कहानियों में पात्र अपने अकेलापन से छुटकारा भी पाने की कोशिश करते है तो कही वे अकेलापन में ही जीना चाहते है। सभी कहानियों में परिवेश भिन्न हैए परिस्थिति भिन्न है परन्तु समस्या एक ही।

ष्सम्बन्धष् कहानी की मुख्य पात्र है श्यामला। श्यामला एक पढ़ी.लिखी महिला है। जो कि विदेश में रहती है। एक समय उसका भी भरा.पूरा परिवार था जिसकी ज़िम्मेदारियाँ उसे उठानी पढ़ती थी। लेकिन जब उसके परिवार के सभी लोग अपने.अपने जीवन में स्थिर हो

जाते हैं तो वह उन्हें छोड़कर विदेश चली आती है। उसके परिवार वाले बीच.बीच में उसे वापस लौटाने के लिए करते हैं लेकिन वह उन सब से कटकर अकेले अपनी इच्छानुसार जीवन बिताना चाहती है। विदेश में रह कर वह फ्रीलांस काम करती है।वह सर्जन नामक एक व्यक्ति से सम्बन्ध रखती है जो कि एक डॉक्टर है। सर्जन जहाँ काम करता है उसी अस्पताल के पास वाली पहाड़ी के एक कॉटेज में अकेले रहती है। सर्जन नियमित रूप से उससे मिलने उसके कॉटेज आता.जाता रहता है। सर्जन उससे प्यार करता है और श्यामला भी उससे प्यार करती है। लेकिन उसे किसी भी प्रकार की कमिटमेंट वाली जिंदगी नहीं चाहिए। सर्जन ने जब उससे एक बार अपने प्यार का ज़िक्र करते हुए कहा था कि वह अपने परिवार को छोड़कर उसके पास आ जाएगा तब श्यामला कह उठती है.श क्या हम ऐसे ही नहीं रह सकतेए प्रेमीए मित्रए बंधु। क्या वह सब छोड़ना जरूरी हैृ मैं तो कुछ नहीं मांगतीश। ;4द्ध वस्तुतः श्यामला सबसे कटकर रहती है जिसे वह देखा नहीं पाता। उषा प्रियंवदा ने श्यामला के अकेलापन की चाह तथा उसकी अपने प्रति की उदासीनता को सर्जन मन में उठ रही भावनाओं के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है.वह लेटा.लेटा श्यामला को देखता हैए दुबली पतली सँवली श्यामलाए अविवाहित शरीर अभी भी गठा हुआ हैए उसमें युववस्था की लचक हैए चेहरे पर लावण्य आकर थम गया हैए कभी.कभी नींद में उसकी बाँहें सर्जन को ऐसे कस लेती हैंए जैसे कभी अलग न होने देंगी और वह कहती है कि मन में कुछ नहीं बचा। कभी.कभी वह उसके कंधे झींझोड़कर कहना चाहिएए जागो श्यामलाए यह वैरागीपन तुम्हारा सहज स्वाभाव नहीं है। हाँसोए बोलोए आंकठ डूबकर प्यार करोए पर वह अब कहता नहीं। सिर्फ उस दिन की आशा में है जब श्यामला अपने आप जागेगी। अपने को काटकर रखने की बजाय जुड़ना चाहेगी। पर कभी ऐसा होगा भीृ

श्यामला के इस प्रकार अकेले स्वतंत्र रुप से रहने के पीछे उसके स्वार्थ.भरे सुख की चाह है। लेकिन यह अकेलापन उसकी भटकन है जो उसने खुद चुनी है। वह अपनी भावनाओं को भी मन में गहारे अंधेरे में छोड़कर जीने लगता है तभी कहानी में एक मोड़ आता है। कहानी की शुरुआत में एक लड़की जो कि सर्जन के चिकित्साधीन थी वह मर जाती है जिससे सर्जन को बहुत दुख होता है। वह लड़की वास्तव में भारतीय थी और श्यामला से उसके कॉटेज में

मिलती है श्यामला की मित्रता होती है। श्यामला को जब पता चलता है कि वह लड़की वही है तो वह अपने आपको रोक नहीं पाती और रोने लगती है और तब सर्जन उसे नहीं भावनाओं का स्त्रोत उमड़ आए।

ष्ज़िन्दगी और गुलाब के फूलष् कहानी के मुख्य पात्र है ष्सुबोधष्। सुबोध कभी अच्छी नौकरी किया करता था। तब उसके परिवार में उसकी अच्छी स्थिति थी। परन्तु जब सुबोध ने आत्मसम्मान के खातिर नौकरी छोड़ दी तो उसकी स्थिति खराब हो जाती है। उसकी बहन वृन्दा की नौकरी लग जाने के बाद उसके साथ परिवार में नौकरी जैसा बर्ताव होने लगता है। उसके कमरे से कालीन मेजए आराम कुर्सी आदि सब कुछ वृंदा के कमरे में यूँ ही ठंडा पड़ रहता है। यहाँ तक कि उसकी शोभा नामक लड़की से होनेवाला था वह भी टूट जाता है। बार.बार बहन से आहत होने रहने पर एक बार वह झूंझला उठता है. कितने दिनों से गंदे कपडे पहन रहा हुँ। पंद्रह दिन में नालायक धोबी आयाए तो उसे भी कपडे नहीं दिये गये। तुम माँ बेटी चाहती क्या होष् आज मै बेकार हुँए तो मुझसे लानत है ऐसी ज़िन्दगी पर। अंततः वह अपनी उदासी और खालीपन के साथ समझौता करते हुए जीन पर विवश हो जाता है।

डॉण् देवेच्छ के शब्दों में दृआत्मासम्मान के एक बिंदु पर सुबोध अपनी नौकरी से त्याग . पत्र देता है। कोई और काम न मिलने के कारण उसकी स्थिति बिगड़ने लगती है। घर में वह व्यर्थ होना लगता है और निरंतर अपेक्षा के क्रूर काशघात पाने लगता है। शोभा का अन्यत्र वागदान हो जाता है। यह स्थिति उसे तोड़ जाति है। शोभा का प्रस्तावित पति और शोभा के बीच तीसरा व्यक्ति बन कर आता है और उसे न केवल शोभा से अपदस्त करता है प्रस्तुत सम्पूर्ण परिवार में स्थापित कर जाता है। यहाँ जो सुबोध के साथ अपेक्षा का व्यवहार सिर्फ इसलिए किया जाता है क्योंकि वह बेकार है घर कि आर्थिक ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता है।निरंतर निरंतर रही अपेक्षा एवं क्रूर व्यवहार से सुबोध के आत्मसम्मान को ही गहरा आघात मिलता है जिससे उसके जीवन में उदासी और अकेलापन छा जाता है। जिस कारण वह न तो घर सही समय पर आता है न उसे घर में चल रही गतिविधियों में कोई रूचि रह जाती है।

सुबोध क्रोध में घर निकलता है। श्अपनी छटपटाहट में उसके अंदर एक तीव्र विध्वम्स प्रवृत्ति जाग उठी थी। उसका मन चाह रहा था कि जो कुछ भी सामने पड़ेए उसे तहस.नहस कर डालेश ।;५द्ध

ऐसे समय वह एक साईकिल सवार से टकारा जाता है। उसकी कोहनी छिल गयीए खून टपकने लगा। पैरों में भी पीड़ा होने लगी। उसे इस दर्द से आत्म.पीडन का संतोष हुआ। वह चाह रहा था कि उसे दर्द मिले। पर ऐसा होता नहीं। जब वह घर लौटा तो उसकी थाली उसके कमरे में रखी थी। किसी ने भी नहीं पुछा कि इतनी देर से क्यों आयेघ लंगड़ा क्यों रहे होघ आधुनिकता के अभिशाप है बेरोजगारी। और बेरोजगार के प्रति किसी को भी सहानुभूति नहीं होती। निरंतर मिल रही उपेक्षा एवं क्रूर व्यवहार से सुबोध के आत्मसम्मान को ही गहरा आघात मिलता है जिससे उसके जीवन में उदासी और अकेलापन छा जाता है।

ष्स्वीकृतिष् की जपा को भी अकेलापन का साथ झेलना पड़ता हैं। जपा अपने पति सत्य के विवाह के बाद एक सुन्दर संसार गढ़ने की होती है कि सत्य उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध मिशिगन में पंद्रह सौ डॉलर नौकरी पर लगवा देता है क्यों कि सत्य को अपने लिए एक बड़े घर की चाह हैए सुन्दर फर्नीचर और महंगे टाइल्स के साथ जिसके लिए वह जपा को कड़े तेवर में समझाता है कि वर्तमान परिस्थिति में वे लोग जिसप्रकार रह रहे हैं वहाँ इस प्रकार की नौकरी की अवश्यकता है और फिर वही उसे अकेला छोड़ आता है। जपा जब.जब भी अपने विवाहित संसार को बसाने की बात करती है तब ृ तब सत्य उसे रोक देता है। शदी की पाँचवी वर्षगाँठ मनाने पहुँचे जपा के मन में किसी भी प्रकार की उमंग या अपेक्षा के बजाए ठंडेपन और निरपेक्षता का भाव है जो उसे सत्य से बार बार प्राप्त होता रहा है। सत्य की इच्छानुसार ही उसे चलना पड़ता है। जिस कारण वह इसी विवाहित जीवन से ऊब सी महसूस करने लगती है। वह अपने साहकर्मी ; वाल द्ध के प्रति आकर्षित होती है तथा उसके साथ कुछ अच्छे पल बिताती है। पाँचवी वर्षगांठ मनाने के लिए जब सत्य उसे वाशिंटन द्वीप ले आता है और जपा उससे यहा आने का कारण पूछती है तो सत्य का जवाब कि प्रोफेसर

साइमन ने सुझाया था। उसने कहा कि श्यहाँ आकर या तो सम्बन्ध द्रढ़ हो जाते हैंए या फिर टूट ही जाते हैंए बिलकुलश।;६द्ध

यह सुनकर उसे आश्चर्य होने लगता है। रिश्ते में बंधे होकर भी इस प्रकार की बात करना वस्तुतः मन के भीतर के खालीपन को दर्शाता है। यही एकाकीपन आगे चलकर विभिन्न प्रकार की परिस्थियॉ एवं समस्याएं खड़ी करता है। जिसे हम अलग.अलग समझ बैठते हैं। संबंधों का विखराव या टूटना ही या उसके प्रति उदासीनता का भाव ही व्यक्ति को पहले अपने.आप में ही अकेला कर देता है। जो कि उषा प्रियंवदा की कहानियों में बार. बार उभरकर आती है। परिवार में साथ रहते हुए भी एक .दूसरे के मनोभावों को न समझनाए उनकी उपेक्षा करना इसी प्रकार की समस्याओं को जन्म देता हैए अपने द्ध आप को अकेला पाता है तथा इससे निबटने के लिए दूसरे द्ध तीसरे व्यक्ति का सहारा लेने की कोशिश करता है। वह पहले से नहीं जुड़ पाता तो दुसरे से जुड़ना चाहता है लेकिन वह जुड़ाव पूर्ण नहीं हो पाता हैं। वह व्यक्ति स्वयं को खालीपन से बाहर निकलने केलिए भटकता रहता है। जब वह ऐसा नहीं कर पाता तो गहरी उदासी में डूबता चला जाता है।

हालांकि उषा प्रियंवदा की कहानियों में अन्य समस्याएं भी स्पष्ट रुप से अभिव्यक्त हुई परन्तु वह एक प्रकार से समग्र आधुनिक समाज की समस्याएँ है। आधुनिक समाज की समस्याएं चाहे जैसी भी हो व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करती ही है। जिसके परिणाम इस प्रकार निकलकर आते हैं। आज के युग के भाग.दौड़ की ज़िन्दगी में लोगों के जीवन के मूल्य एवं मान्यताएं बदलते जा रहे हैं। आर्थिकए सामाजिक तरह.तरह की समस्याएं व्यक्तिगत रूप से सभी को प्रभावित करते जा रहे हैंए ऐसे में कमज़ोर या परिस्थिति से हारा हुआ व्यक्ति अपने आस.पास से जुड़कर रहने के बजाए सबसे कटने पर विवश हो जाता है या फिर नए रिश्तों की तलाश में भटकता रह जाता है। जब तक वह अपनी तलाश पूरी नहीं कर लेता या उसमें असफल रह जाता है तब तक वह हताशाए निराशाए घूटनए मृत्युबोधए मूल्य संकटए आत्मकेंद्रीयताए अजनबीपन और अकेलापन से भर जाता है।

इसलिए लेखिका अपनी कहानियों में इन समस्याओं से उभरकर आने केलिए जीवन के आदर्श एवं व्यवहारिक मूल्यों पर आस्था रखने वाले पत्रों की भी संरचना की है जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में भटकने से बच जाए।

ष्नींदष कहानी की नायिका अपने पति से अलग हो जाने का दर्द पाती है। वह विदेश में उसके पति के साथ आकर रहती है लेकिन दोनों अलग हो जाते है। उसे यह अकेलापन बहुत खटकता है वह उससे डरती है दृश्मैं बहुत कम चीज़ों से डरती हूँ. न रोग सेए न गरीबी सेए न ठंड सेए डरती हुँ तो बस एक लम्बीए अँधेरी रात के अकेलापन से। औरए उसके त्राण के लिए ही इधर .उधर भटकती हुँश्। ;७द्ध वह अकेलापन दूर करना चाहती है। उसे रात को अकेले नींद नहीं आती है। डॉक्टर उसे बचाना चाहता है। डॉक्टर के मुताबिक यह उसकी मानसिक बिमारी है जिससे उभरकर वह यदि आ जाए तो फिर से अपना घर बसा सकती है। लेकिन वह नहीं मानती कि वह बीमार है। वह कहती है कि कि श नहींए मैं रुग्ण नहीं हुँए न मुझमें कोई मानसिक विकृति है। वह डॉक्टरए मेरा मनोविदझूठ ढूंढती हुँए कम्पेनियशिपए तुम्हेंजिलाए रखने के लिएश्। ;८द्ध कहानी के अंत में नायिका अपने पुराने घर जहाँ वह और उसका पति आकर रहा करते थे वहां जाती है। उसकी पति के साथ बीते वक्त को तलाशने। उसे इस अकेलापन ने बहुत सताया है जिससे उसे नींद नहीं आती और वह नींद की गोलियाँ लेती है। वह उसी टूटे घर के कमरे में अंत में बैठकर उन गोलियों के सहारे सो जाती है।

नई कहानी में अपनी विशिष्टता की वजह से बहूचर्चित और बहुप्रसिद्ध रही उषा प्रियांवदा आज हिंदी कहानी की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। उनकी सभी कथाओं में यथार्थ युगबोध निहित है। बदलते आधुनिक युग समाज में पारिवारिक रिश्तों में बदलावए बेकारीएउदासी और अकेलापन जैसी महत्वपूर्ण विषय अभिव्यक्त हुई है उनकी कहानियों में। प्रियं वदा जी की ऐसी कुछ कहानियाँ ज़िन्दगी और गुलाब का फूलए सम्बन्धए नींदए स्वीकृति आदि में पात्र अपनी अकेलापन से छुटकारा भी पाने की कोशिश करते है तो कही वे अकेलापन में ही जीना चाहते है। सभी कहानियों का परिवेश भिन्ना है लेकिन सब की समस्या एक ही है . वह अकेलेपन का गहरा एहसास है ।

सन्दर्भ संकेत

1ण डॉण सुभाष पवार रू कथाकार उषा प्रियंवदा दृ पृण ६८

2ण अविनाश महाजन रू उषा प्रियंवदा की कहानियों में टूटते जीवन.मूल्यों का यथार्थ चित्रण रू पृण 4

3ण डॉ सुभाष पवार रू कथाकार उषा प्रियंवदा दृ पृ ३७

4ण उषा प्रियंवदा रू सम्पूर्ण कहानियाँ दृ पृण ३२४

5ण वहीं . पृण १३९

6ण वहीं . पृण ३७२

7ण वहीं . पृण ३५७

8ण वहीं दृ पृण ३५९